Siddharth University In News 06.08.2021

सिविवि में राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन

यूथ इण्डिया संवाददाता

सिद्धार्थनगर। एनईपी 2020 की वर्षगांठ पर चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सिद्धार्थ विश्व विद्यालय व कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर द्वारा शनिवार को भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, कला तथा संस्कृति विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन करवाया गया।

मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम ने बोलते हुए कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान, संस्कृति और कला की परम्पराएं बेहद विशिष्ट रही हैं। इसका व्यापक प्रभाव नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर है। इसका यह प्रमाण है कि इस शिक्षा नीति के प्रारूप में संस्कृति शब्द सौ से अधिक बार आया है। दर्शन और इतिहास यह इंगित करता है कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. मंजू जौहरी ने कहा कि मानवता का विकास ही संस्कृति का विकास है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का समावेश कला, साहित्य सब में बहुत ही गहरा है।

प्राचीन संस्कृति और उसके विविध तत्वों से यदि हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं तो भविष्य और भी अधिक बेहतर बनाया जा सकता है। वेबिनार सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव के संरक्षण में आयोजित हुआ। वेबिनार के संप्रेरक विश्वविद्यालय के कुलसचिव राकेश कुमार थे। वेबिनार की अध्यक्षता प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने किया। संयोजन तथा अतिथियों का स्वागत एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीता यादव ने किया। संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. वन्दना गुप्ता तथा धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी ने किया।

राष्ट्रीय वेबिनार का हुआ आयोजन

कपिलवस्तु (एसएनबी)। एनईपी 2020 की वर्षगांठ पर चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालयब कपिलवस्तु सिद्धार्थनगर द्वारा शनिवार को भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, कला तथा संस्कृति विषय पर एक राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन करवाया गया।

मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम ने बोलते हुए कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान, संस्कृति और कला की परम्पराएं बेहद विशिष्ट रही हैं। इसका व्यापक प्रभाव नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर है। इसका यह प्रमाण है कि इस शिक्षा नीति के प्रारूप में संस्कृति शब्द सौ से अधिक बार आया है। दर्शन और इतिहास यह इंगित करता है कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। विशिष्ट अतिथि डा. मंजू जौहरी ने कहा कि मानवता का विकास ही संस्कृति का विकास है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का समावेश कला, साहित्य सब में बहुत ही गहरा है। प्राचीन संस्कृति और उसके विविध तत्वों से यदि हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं तो भविष्य और भी अधिक बेहतर बनाया जा सकता है। वेबिनार सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव के संरक्षण में आयोजित हुआ। वेबिनार के संप्रेरक विश्वविद्यालय के कुलसचिव राकेश कुमार थे। वेबिनार की अध्यक्षता प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने किया। संयोजन तथा अतिथियों का स्वागत एसोसिएट प्रोफेसर डा. नीता यादव ने किया। संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर डा. वन्दना गुप्ता तथा धन्यवाद ज्ञापन असिस्टेंट प्रोफेसर डा. शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी ने किया।

शनिवार को एनईपी की वर्षगांठ पर सिद्धार्थ विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया

सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है नई शिक्षा नीति

वॉयस ऑफ शताब्दी

सिद्धार्थनगर। एनईपी की वर्षगांठ पर चल रहे कार्यक्रमों की श्रृंखला के अन्तर्गत प्राचीन इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय द्वारा एक राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। शनिवार को भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, कला तथा संस्कृति विषय पर वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

वेबिनार के मुख्य अतिथि प्रो. कुमार रत्नम, सदस्य सचिव, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान,

शनिवार को आयोजित वेबीनार में शामिल वक्ता व अतिथि।

आयोजन

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद के प्रो. कुमार रत्नम वेबीनार के मुख्य अतिथि रहे

संस्कृति और कला की परम्पराएं बेहद विशिष्ट रही है। इसका व्यापक प्रभाव नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर है। इसका यह प्रमाण है कि इस शिक्षा नीति के प्रारूप में संस्कृति शब्द सौ से अधिक बार आया है। दर्शन और इतिहास यह इंगित करता है कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है। नई शिक्षा नीति सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित वैश्विक मानव के निर्माण की प्रक्रिया तथा प्राचीन और आधुनिक प्रोद्योगिक के सेतु के रूप में कर रही है। आधुनिकता बिना प्राचीन ज्ञान परम्परा के समग्रता नहीं प्राप्त कर सकती। नई शिक्षा नीति इन आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। विशिष्ट अतिथि उरई, जालौन के दयानंद वैदिक कालेज की प्रो. मंजू जौहरी ने कहा कि मानवता का विकास ही संस्कृति का विकास है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का समावेश कला, साहित्य सब में बहुत ही गहरा है।

प्राचीन संस्कृति और उसके विविध तत्वों से यदि हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं तो भविष्य और भी अधिक बेहतर बनाया जा सकता है। नई शिक्षा नीति के द्वारा यह कार्य बखूबी पूरा किया जा रहा है।

वेबीनार कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव के संरक्षण में हुआ। संप्रेरक कुलसचिव राकेश कुमार रहे। अध्यक्षता एनईपी के नोडल अधिकारी तथा अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश कुमार शर्मा ने किया। संयोजन तथा अतिथियों का स्वागत प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग की विभागाध्यक्ष एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. नीता यादव ने किया। संचालन असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. वन्दना गुप्ता तथा धन्यवाद असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी ने किया।

विशिष्ट है प्राचीन भारतीय ज्ञान और कला : प्रो. कुमार

कार्यक्रम

- सिविवि के व्याख्यान श्रृंखला के सातवें दिन हुआ कार्यक्रम
- नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी पहलुओं पर हुई परिचर्चा

जासं, सिद्धार्थनगर : सदस्य सचिव भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद शिक्षा मंत्रालय नई दिल्ली प्रो: कुमार रत्नम ने वर्चुअल व्याख्यान श्रृंखला में कहा कि प्राचीन भारतीय ज्ञान, संस्कृति और कला की परंपराएं अति विशिष्ट रही हैं। इसका व्यापक प्रभाव नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर है। इसका प्रमाण है कि इस शिक्षा नीति के प्रारूप में संस्कृति शब्द का प्रयोग 100 से अधिक बार किया गया है। दर्शन और इतिहास यह इंगित करता है कि भारत एक सांस्कृतिक राष्ट्र है।

उन्होंने शनिवार को सिद्धार्थ विश्वविद्यालय की ओर से संचालित वर्चुअल व्याख्यान श्रृंखला में अपने विचार रखे। वह भारतीय ज्ञान प्रणाली, भाषा, कला और संस्कृति विषय पर व्याख्यान दे रहे थें। उन्होंने कहा नई शिक्षा नीति सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित वैश्विक मानव के निर्माण की प्रक्रिया तथा प्राचीन और आधुनिक प्रोद्यौगिक सेतु के रूप में कार्य करेगी। बिना प्राचीन ज्ञान व परंपरा, समग्रता के आधुनिकता को नहीं प्राप्त किया जा सकता है। नई शिक्षा नीति इन आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। जालौन के दयानंद वैदिक कालेज की प्रो. मंजू जौहरी ने कहा मानवता का विकास ही संस्कृति का विकास है। प्राचीन भारतीय संस्कृति का समावेश कला, साहित्य सब में बहुत ही गहरा रहा है। प्राचीन संस्कृति और उसके विविध तत्वों से यदि हम प्रेरणा ग्रहण करते हैं तो भविष्य को और भी अधिक बेहतर बनाया जा सकता है। नई शिक्षा नीति से यह कार्य बखूबी पूरा किया जा रहा है। अध्यक्षता सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव व संचालन कुलसचिव राकेश कुमार ने की। अधिष्ठाता कला संकाय प्रो. हरीश शर्मा, विभागाध्यक्ष प्राचीन इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग डा. नीता यादव, डा. वंदना गुप्ता, डा. शरदेंदु त्रिपाठी, डा. अविनाश प्रताप आदि मौजूद रहे।